छोटे बच्चों के साथ मुखर वाचन (रीड अलाउड)

दृश्य 1[1]

शिक्षिका पहली और दूसरी कक्षा के बीस बच्चों के समूह को अपने पास बैठाती हैं। अभी दिन की शुरुआत ही हुई है, इसलिए वह उनके जाने-पहचाने एक गीत से शुरुआत करती है ताकि सभी बच्चे शांति से बैठ जाएँ।

शिक्षिका (गाते हुए): *क्या तुमने, क्या तुमने, **हाथी** देखा जी? क्या तुमने, क्या तुमने, **हाथी** देखा जी?*

*वो तो **यूँ**...वो तो **यूँ**..वो तो **यूँ - यूँ** करता जी!*

(वह उनको दिखाती है कि हाथी किस तरह अपनी सूंड हिलाता है।)

बच्चों को गीत गाने और हाथी जैसी हरकतों की नकल करने में मजा आ रहा है। शिक्षिका एक-दो और जीवों के बारे में गीत गाने के बाद आगे बढ़ती हैं।

शिक्षिका: ठीक है, ठीक है। (*एक सौ सैंतीसवाँ पैर*[2] किताब का कवर हाथ में लेकर सबको दिखाते हुए) आज हम एक जीव की कहानी पढ़ेंगे।

बच्चे (उत्साह के साथ): वाह, कहानी!!

शिक्षिका: हाँ। और नज़दीक आ जाओ। क्या तुम सब ये किताब देख सकते हो? (*किताब के कवर पेज की तरफ इशारा करते हुए*) देखो यहाँ तुमको क्या दिखाई दे रहा है?

एक बच्चा: मुझे सूरज दिख रहा है!

बाकी बच्चे: पेड़!

शिक्षिका: अच्छा ... तो बहुत से पेड़ कहाँ मिलते हैं?

बच्चे: जंगल में!

---

1 इस हैंड आउट में दिए दृश्यों की प्रेरणा लेखक को QUEST, महाराष्ट्र और मुस्कान, भोपाल में आयोजित मुखर वाचन सत्रों के अवलोकन से मिली। (मुस्कान में सत्रों का आयोजन पराग इनिशिएटिव की परियोजना के लिए किया गया था)।

2 प्रथम बुक्स द्वारा प्रकाशित (2017)। लेखन व चित्र माधुरी पुरंदरे द्वारा। यह किताब आप यहाँ देख सकते हैं: https://storyweaver.org.in/stories/10145-ek-sau-saintisvan-paer

शिक्षिका: हाँ, तो शायद यह कहानी भी जंगल में होती है। कहानी का नाम है **'एक सौ सैंतीसवाँ पैर'।** (बच्चे इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं प्रकट करते)। हम लोग कक्षा में नंबर सीख रहे हैं। है न? तुम लोगों को कौन से नंबर पता हैं?

बच्चे: 10...20...50... 35...

शिक्षिका: 20 नंबर 10 से बड़ा होता है न? और 50, 20 से बड़ा। क्या 50 से बड़ा कोई नंबर तुम्हे मालूम है?

बड़े बच्चे: 100! जैसे कि 100 रुपए 50 रुपए से ज़्यादा होते हैं।

शिक्षक: सही कहा! 100 तो 50 से बहुत ही बड़ा होता है। देखो, इस कहानी का नाम है '**एक सौ सैंतीसवाँ पैर**' यानी सौ से भी ज़्यादा पैर! **क्या बात है!** आखिर किस जीव के इतने सारे पैर हो सकते हैं?

थोड़ी देर के लिए बच्चों की आँखें आश्चर्य से फैल जाती हैं।

पहला छात्र: चींटी! **दूसरा छात्र:** मकड़ी?

बाकी बच्चे: नहीं ...! चींटियों और मकड़ियों के इतने पैर नहीं होते हैं। मकड़ी के बस आठ पैर होते हैं!

तीसरा छात्र: अरे हाँ... मुझे पता है! वह चीज़ जो तितली बन जाती है!

चौथा छात्र: वह चीज जो पत्तों पर रेंगती है। (हाथ से ऐसा करके दिखाती है।)

शिक्षिका: हाँ, उसे क्या कहते हैं?

पाँचवाँ छात्र: इल्ली!

शिक्षिका: इल्ली! हाँ। क्या तुमने कोई इल्ली देखी है?

तीसरा छात्र: हाँ, मैने हरी इल्लियाँ देखी हैं। वे हरे अंडों से निकलती हैं।

चौथा छात्र: मैंने भूरी इल्लियाँ देखी हैं।

शिक्षिका: अच्छा, मतलब इल्लियाँ कई किस्म और कई रंगों की होती हैं ... अच्छा, तो क्या अब यह बता सकते हो कि यह कहानी किसके बारे में होगी?

कई छात्र: इल्लियों के बारे में!

शिक्षिका: हाँ। बल्कि यह कहानी एक खास किस्म की इल्ली के बारे में है जिसे **गोजर** कहते हैं। अब देखें कि इस गोजर इल्ली के साथ क्या होता है?

छात्र: हाँ! पढ़ते हैं!

शिक्षिका कहानी के लेखक-चित्रकार के बारे में बताकर कहानी पढ़ना शुरू करती है।

जैसा कि इस दृश्य से पता चलता है, बच्चे अच्छी कहानी सुनना पसंद करते हैं। भाषा व साक्षरता विशेषज्ञों में भी कक्षा में कहानी पाठ और मुखर वाचन (रीड-अलाउड) की ताकत को लेकर खासा उत्साह दिखता है।

मौखिक कहानी पाठ में शिक्षक बच्चों को कोई कहानी सुनाते हैं और फिर उस पर चर्चा करते हैं; जबकि मुखर वाचन में शिक्षक किताब से कहानी पढ़कर सुनाते हैं। इसमें कहानियाँ ही नहीं बल्कि कथेतर-साहित्य (जैसे कि, जानवरों या पौधों से संबंधित किताबें) भी बच्चों को पढ़ कर सुनाई जा सकती हैं।

उन कक्षाओं को देख कर, जहाँ शिक्षक नियमित तौर से मुखर वाचन करते हैं, ऐसा लग सकता है कि शिक्षक को कोई भी किताब उठाकर बस पढ़ना शुरू कर देना है और बच्चे अपनेआप उसमें रम जाएँगे। लेकिन ऐसा नहीं है! एक सफल मुखर वाचन के लिए बहुत बारीकी से योजना बनानी होती है और उसका अभ्यास करना होता है। इस हैंडआउट में हम पर्दे के पीछे चलने वाली इस तैयारी को स्पष्ट करने की कोशिश करेंगे।

मुखर वाचन क्यों?

देश की ज़्यादातर कक्षाओं में बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए बोर्ड पर अक्षर लिख कर उनकी नकल उतारने को कहा जाता है। इसके बाद शब्द, वाक्य आदि की नकल उतारने को कहा जाता है। अगर बच्चे इस तरह पढ़ना सीख भी जाएँ तब भी शायद वे यह न समझ सकेंगे कि *पढ़ना आखिर होता क्या है,* या *हम पढ़ते क्यों है?*

पढ़ने के कई उद्देश्य होते हैं, जैसे मज़े और आनंद के लिए पढ़ना; जानकारी के लिए पढ़ना; संप्रेषण के लिए पढ़ना, वगैरह। नियमित रूप से किताबें पढ़ कर सुनाने से हम बच्चों के साथ पढ़ने की इन कुछ वजहों को सांझा कर रहे होते हैं। इस समझ के बगैर हो सकता है बच्चे साक्षरता शिक्षा का कोई मतलब ही न निकाल पाएँ (स्टॉल, 1992)।

मुखर वाचन बच्चों को यह भी दिखाता है कि भाषाएँ किस तरह काम करती हैं और अर्थ का निर्माण किस तरह होता है (बैरेनटाइन, 1996)। मुखर वाचन दिखाता है कि अच्छे पाठक किस तरह सही भाव, गति व लय में धाराप्रवाह पढ़ते हैं; कि वे पाठ को किस तरह ग्रहण करते हैं और उसके बारे में किस तरह सोचते हैं, और साथ ही, वे जो पढ़ रहे हैं उसे किस तरह अपने पूर्व ज्ञान व अनुभवों से जोड़ते चलते हैं।

मौखिक कहानी-पाठ की ही तरह मुखर वाचन बच्चों की कल्पनाशीलता व जिज्ञासा को जगा सकता है। बच्चे जो पढ़ते और सुनते हैं उसके बारे में सक्रिय रूप से सोचते हैं - कि अब तक क्या हुआ? इसके बाद क्या होने जा रहा है? क्यों? कैसे?

और तो और, इस गतिविधि से बच्चे उस आनंद का अनुभव कर पाते हैं जो हमें पढ़ने से मिलता है। इन सबसे विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने की प्रेरणा मिलती है (चित्र 1 देखें) और शायद यह उनको पढ़ने की जीवनपर्यंत यात्रा के लिए भी तैयार करता है!

चित्र 1: स्वतंत्र रूप से पढ़ते बच्चे (स्रोत: SAJAG, मुम्बई)

प्रभावशाली मुखर वाचन के लिए तैयारी

मुखर वाचन के लिए सोच-समझ कर योजना बनाने की और लम्बे अभ्यास की ज़रूरत होती है (शेड व ड्यूक, 2008)। हम इनके बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे। **परिशिष्ट 1** में हमने **मुखर वाचन की योजना बनाने की गाइड** भी दी है। मुखर वाचन सत्र की योजना बनाते समय आप इस गाइड का उपयोग कर नोट्स बना सकते हैं। योजना बनाने के विभिन्न आयामों को स्पष्ट करने के लिए हमने दृश्य 1 में आईं शिक्षिका (*एक सौ सैंतीसवाँ पैर* पर मुखर वाचन सत्र) के नोट्स को इस परिशिष्ट में भी शामिल किया है।

1. मुखर वाचन के लिए पाठ का चयन

- ऐसी किताबें चुनिए जो आपके छात्रों के लिए दिलचस्प हो और उनका ध्यान बाँधे रख सके। यानी ऐसी किताबें जो उनके उम्र, पृष्ठभूमि, ज़रूरतों व अभिरुचियों के अनुरूप हों। ऐसे विषय भी ठीक रहेंगे जिन पर कक्षा में उन दिनों बातचीत चल रही हो या ऐसे मसले जिनसे विद्यार्थी जूझ रहे हों । *गुड बुक्स गाइड* (नेशनल बुक ट्रस्ट, 2014[3], देखें चित्र 2) के अनुसार, छोटे बच्चे खुद से

3 यह किताब इंटरनेट पर यहाँ मिल सकती है - http://eli.tiss.edu/wp-content/uploads/2017/08/Guide-to-Good-Books-1.pdf

जुड़ी (मतलब जिनमें उनकी पसंद/नापसंद, अनुभव, डरों आदि की झलक होती है) या पारिवारिक जीवन, दोस्ती, जानवरों, प्रकृति, स्नेह, मिथक और आसान फँतासी से जुड़ी किताबें पसंद करते हैं।

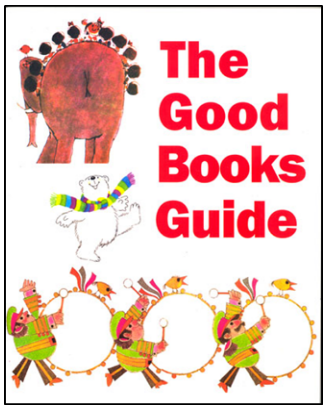

चित्र 2: द गुड बुक्स गाइड (नेशनल बुक ट्रस्ट)

- वे किताबें चुनिए जिनमें उच्च स्तर की बातचीत प्रेरित करने की क्षमता हो। मतलब, विद्यार्थियों की उम्र व स्तर को ध्यान में रखते हुए, क्या किताब गहन चिंतन संभव बनाती है, क्या वह विद्यार्थियों को अपने जीवन और आसपास के परिवेश के बारे में ध्यान से सोचने को प्रेरित करती है?
- छोटे बच्चे ऐसी किताबें पसंद करते हैं जिनकी संरचना (कथानक) आसान हो और जिसके पात्रों के साथ वे आसानी से जुड़ाव महसूस कर सकें - यानी उनके विचारों व अनभवों में उनको अपनी झलक दिखाई देती हो।
- ऐसी किताबें चुने जिनकी भाषा समृद्ध हो। भाषा का रोचक प्रयोग, तुकबंदियाँ, शब्दों व ध्वनियों के साथ खेल किताब को पढ़ना बच्चों के लिए एक आनंददायी अनुभव बना देता है।
- ऐसी किताबें खोजते रहें जिनमें सशक्त चित्र हों जो बच्चों का ध्यान व उनकी कल्पना अपनी ओर खींच लें। सुंदर चित्र या सशक्त तस्वीरें बच्चों को कहानी समझने में मदद करते हैं और उनको बाद में उस किताब को खुद 'पढ़ने' के लिए प्रोत्साहित करते हैं (भले ही वे अभी बस पढने की मात्र नक़ल कर रहे हों)| बड़े बच्चों के लिए (चौथी कक्षा व उससे आगे) आप ऐसी किताबें भी पढ़ सकते हैं जिनमें चित्र न बने हों। हालाँकि हमारी सलाह होगी कि आप शुरुआत सचित्र किताबों से ही करें।
- ऐसी किताबें चुने जो समावेशी हों—वे किसी समूह या समुदाय की रुढ़िग्रस्त छवि न पेश करते हों या उनका असम्मान न करते हों। मिसाल के लिए, ऐसी किताबें जिनमें विकलाँग बच्चों को दूसरों पर निर्भर दिखाने की बजाय अपने निर्णय खुद लेते हुए दिखाया गया हो।

- धीरे-धीरे अलग-अलग विधाओं व किस्मों की किताबें शामिल करें, मसलन, कविताएँ, कथेतर साहित्य, साहसिक कारनामें, हास्य वगैरह।
- ऐसी किताबों पर भी विचार करें जो भाषा सीखने के दिलचस्प मौके देती हों, जैसे प्रिंट चेतना के अलग-अलग आयाम, शब्दावली, कहानी की संरचना, लेखन शैली वगैरह के अलग-अलग रूप आदि।

2. पाठ के केन्द्र-बिंदु / उद्देश्य को तय करना

बच्चों के साथ किसी पाठ का मुखर वाचन करते हुए अपने उद्देश्य को लेकर स्पष्ट रहें। उद्देश्यों के कुछ उदाहरण कुछ मिसालें इस प्रकार हैं:

- छपाई /प्रिंट चेतना संबंधी अवधारणाओं का प्रदर्शन[4]
- कहानियों की संरचना सीखना
- पूर्वानुमान लगाना और बाद में मिली जानकारी के आधार पर इन पूर्वानुमानों को जाँचन पाना
- पाठ/कहानी को खुद के जीवन और अनुभवों से, बाहर की दुनिया के साथ, या पहले पढ़ी हुई किताबों से जोड़ कर देखने का कौशल सीखना;
- निष्कर्ष निकालना सीखना;
- चित्रों पर चर्चा करना (जैसे, क्या ये किसी महत्त्वपूर्ण तरीके से कहानी को आगे ले जाते हैं? क्या ये पाठ के अर्थ में कुछ बदलाव लाते हैं? क्या ये कहानी की परिस्थितियों के बारे में कोई ज़रूरी बात बताते हैं?)
- पाठ/कहानी के साहित्यिक तत्वों पर बातचीत, मसलन, उसके कथानक, पात्र, विषय (थीम), भाषा, स्थिति, विधा, वगैरह। मिसाल के लिए, मान लीजिए आपने पात्रों के बारे में बात करने का फैसला लिया है, अब आप विद्यार्थियों को कहानी के मुख्य पात्र पहचानने में, उनकी तुलना खुद से या ऐसे लोगों से जिनको बच्चे जानते हैं, करने में मदद कर सकते हैं; पात्रों के कार्यों के पीछे की मंशा और समय के साथ पात्रों में कैसा बदलाव आया वगैरहपर बातचीत कर सकते हैं (वुल्फ़, 2004)।

4 प्रिंट चेतना संबंधी अवधारणाओं के लिए ईएलआई हैंडआउट 'इमर्जेंट लिटरेसी' देखें।

दृश्य 1 में जिस सत्र का वर्णन किया गया है उसमें शिक्षिका बच्चों को *पूर्वानुमान लगाने,* और किताब में *उभरती जानकारी के आधार पर इन पूर्वानुमानों को ठीक करना* सीखने में मदद करना चाहती थीं (देखें **परिशिष्ट 1**)। ध्यान दें कि आप किसी पाठ में एक से अधिक बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं - मिसाल के लिए, आप एक ही सत्र में बच्चों का ध्यान चित्रों और थीम/विषय दोनों की तरफ ले जाने का फैसला कर सकते हैं!

अपने सत्र के उद्देश्य/उद्देश्यों के बारे में फैसला करने के लिए जिस पाठ का चयन आपने किया है उसकी विशेषताओं और साथ ही अपने विद्यार्थियों की ज़रूरतों के बारे में सोचिए। उदहारण के लिए, QUEST में एक बार एक फैसिलिटेटर ने *जुई मौसी की बेटी*[5] किताब का इस्तेमाल विद्यार्थियों को मुख्य पात्र (अनु नाम की एक छोटी लड़की) के अलग-अलग मनोभावों को पहचानने में मदद करने के लिए किया था। ये मनोभाव छात्रों को अनु की बातों व किये के ज़रिये समझना था। अनु अपनी चाची के नवजात बच्चे से पहली बार मिलने जाती है और इस कहानी में इसकी काफी गुंजाइश है कि छात्र अपने भाई-बहनों के जन्म के अपने अनुभवों से इसे जोड़ कर देख सकें। फैसिलिटेटर को यह उम्मीद थी कि इस चर्चा के जरिए विद्यार्थी खुद के मनोभावों को अभिव्यक्त करने के लिए ज़रूरी शब्द सीख सकेंगे, और साथ ही किताबों के मुख्य पात्र, उनके भावों व मंशा के बारे में चर्चा कर सकेंगे।

3. मुखर वाचन का अभ्यास

मुखर वाचन के दौरान अगर आप भावपूर्ण तरीके से पढ़ते हुए अपने छात्रों को साथ लेकर आगे नहीं बढ़ेंगे तो जल्द ही आप पाएँगे कि ज़्यादातर विद्यार्थी इधर-उधर खिसक रहे हैं या एक-दूसरे का ध्यान तोड़ कर रहे हैं। इसलिए यह बेहद ज़रूरी है कि आप भाव, लय, रफ़्तार, और आवाज़ का अभ्यास करें। कक्षा में कोई किताब पढ़ने से पहले एक-दो बार *बोल-बोल कर* उसके वाचन का अभ्यास कीजिए। ध्यान दीजिए कि कब आप अपनी आवाज़ नीची करेंगे, कब आपको ज़ोर लगा कर बोलना है; कहाँ आप अपनी गति धीमी करेंगे और कहाँ बढ़ाएँगे; अलग-अलग पात्रों के संवाद को अलग-अलग तरीके से कैसे पढ़ेंगे; वगैरह। इस अभ्यास से आपको सत्र के दौरान बच्चों की पाठ पर प्रतिक्रिया देखने का मौका मिलेगा। शुरू-शुरू में आप किसी दोस्त से मदद या फीडबैक मांग सकते हैं ।

5 यह किताब यहाँ देखी जा सकती है - https://storyweaver.org.in/stories/78-jui-mausi-ki-beti?story_read=true

4. मुखर वाचन सत्र का सेट-उप

चित्र 3: *अपनी कक्षा में मुखर वाचन करती एक शिक्षिका (स्रोत: मुम्बई मोबाइल क्रेशेस)*

- मुखर वाचन के लिए एक खास माहौल बनाने की कोशिश कीजिए। अपनी कक्षा में कोई जगह निश्चित कीजिए जहाँ इकट्ठे हो कर बच्चे वाचन में शामिल होंगे, जैसे "पढ़ने का कोना"[6]।
- बच्चों को अपने नज़दीक बैठने को कहें (देखें चित्र 3), और यह सुनिश्चित कीजिए कि वे आराम से बैठ गए हों। किताब को इस तरह से पकड़े कि विद्यार्थियों को उसकी लिखाई व चित्र साफ-साफ दिखाई दें। अगर किताब छोटे आकार की है तो हर एक-दो पन्ने के बाद उसे बच्चों के बीच घुमाना न भूलें ताकि वे बच्चे चित्रों को करीब से देख सकें।
- सत्र के दौरान आप जो सवाल या टिप्पणियाँ देना चाहते हैं उनके लिए कागज़ के टुकड़ों या पोस्ट-इट का इस्तेमाल कर सकते हैं।

5. बातचीत की शुरुआत – पृष्ठभूमि बनाना और पाठ में दिलचस्पी जगाना

आप अपने विद्यार्थियों से किताब का परिचय किस तरह कराएँगे जिससे उसको लेकर उनमें जिज्ञासा और रुचि पैदा हो? आप उनको कवर पर बने चित्र को देखते हुए किताब किस बारे में होगी यह सोचने को कह सकते हैं। उनसे ऐसे सवाल कीजिए जिनसे उन्हें किताब के चित्रों और पूर्वानुमानों को अपने अनुभवों से जोड़ने का मौका मिले। मिसाल के लिए, अगर कवर पर चूहे और बिल्ली का चित्र बना है तो आप उनसे यह पूछ सकते हैं कि उन्होंने जो बिल्ली और चूहे देखे हैं, उनमें कैसा सम्बन्ध हैं; उसके आधार पर कहानी में क्या हो सकता है? अगर किताब में ऐसी अवधारणाएँ या शब्द हैं जिनके बारे में उन्हें पहले से ही पता होना चाहिए, तो वे भी समझा दें ताकि उन्हें कहानी को समझने में दिक्कत न हो।

6 पढ़ने के कोने पर ज़्यादा जानकारी के लिए ईएलआई हैंडआउट "क्रिएटिंग प्रिंट-रिच एनवॉयरमेंट" देखें।

दृश्य 1 यह दिखाता है कि किस तरह शिक्षिका *एक सौ सैंतीसवाँ पैर* किताब के लिए माहौल बनाने में इन तत्वों को ध्यान में रखती हैं। विद्यार्थियों से यह कह कर कि वे ऐसे जीव के बारे में सोचें जिसके बहुत सारे पैर होते हैं वे उनका ध्यान किताब के दिलचस्प शीर्षक की तरफ खींचती हैं। उनको पता है कि बच्चे 'एक सौ सैंतीस' की संख्या आसानी से नही समझ पाएँगे। इसलिए वे इस मूल्य की एक सामान्य समझ ('सौ से ज़्यादा') बनाने में उनकी मदद करती हैं ताकि कहानी के प्रति उनमें उत्साह पैदा हो। जब बच्चे उस जीव (इल्ली) का अंदाज़ा लगा लेते हैं तो शिक्षिका उनसे उससे जुड़े अपने अनुभव बताने के लिए कहती हैं – जैसे उन्होंने किस प्रकार व रंग की इल्लियाँ उन्होंने देखी हैं। ये विद्यार्थी 'इल्ली' शब्द तो समझते हैं लेकिन 'गोजर' नहीं जिसका इस्तेमाल पूरी किताब में किया गया है। इसलिए शिक्षिका शुरू में ही इस ज़रूरी शब्द का मतलब उनको समझा देती हैं। वे उनसे किताब के कवर पर बने चित्र के बारे में भी बताने को कहती हैं जिससे कहानी किस जगह घटित हो रही है, बच्चें इसका अंदाजा लगा सकें।

6. मुखर वाचन के दौरान परस्पर संवाद

कुछ शिक्षक मुखर वाचन के अंत में सवाल पूछते हैं। लेकिन यह मुखर वाचन का सबसे बेहतर तरीका नहीं है! इसकी बजाय, पाठ को *पढ़ने के दौरान* भी तीन या चार जगह रुक कर बच्चों को उसमें शामिल होने को कहिए।

कहाँ रुकना है और बच्चों से क्या पूछना है यह तय करने के लिए आप सत्र के उद्देश्य को ध्यान में रखें। मिसाल के लिए, अगर आपका उद्देश्य बच्चों को चित्र और पाठ के बीच के संबंध के बारे में समझाना है तो आप ऐसे कुछ पन्नों पर रुकिए जहाँ चित्र व पाठ के बीच कुछ दिलचस्प संबंध हो। अगर आप बच्चों को पूर्वानुमान लगाना सिखाना चाहते हैं तो आप उन पन्नों पर ठहरेंगे जहाँ कुछ रोचक घटित होने वाला है और विद्यार्थियों से आगे के बारे में सोचने को कहेंगे। दृश्य 2 में *एक सौ सैंतीसवाँ पैर* किताब को लेकर ऐसे ही एक संवाद को दिखाया गया है।

दृश्य 2

(एक मकड़े ने गोजर के टूटे हुए पैर को ठीक करने में मदद करने की पेशकश की है। शिक्षिका अगले पन्ने को कागज़ से ढंक कर बातचीत शुरू करती हैं)

शिक्षिका: तुम्हें क्या लगता है, मकड़ा गोजर का पैर कैसे ठीक करेगा?

पहला बच्चा: वह पैर को रस्सी/धागे से बाँध देगा।

दूसरा बच्चा: नहीं, वह उसे सूई से सिल देगा।

तीसरा बच्चा: वह उसे गोंद से चिपका देगा।

शिक्षिका: ये बड़े दिलचस्प आइडिया हैं। और क्या किया जा सकता है? (बच्चे कुछ नहीं कहते हैं)। हम एक मकड़े की बात कर रहे हैं, है न? क्या मकड़ा किसी और तरीके से पैर को जोड़ सकता है?

चौथा बच्चा: अरे हाँ! मुझे पता है! अपने अपने जाले का इस्तेमाल करेगा!

शिक्षिका: अच्छा, तुम्हे ऐसा क्यों लगता है?

चौथा बच्चा: क्योंकि वही वह चिपकने वाली चीज़ है जिससे वह कीड़े पकड़ता है।

शिक्षिका: हाँ, ऐसा हो सकता है। अब देखें कि मकड़ा वाकई क्या करता है?

(शिक्षिका अगला पन्ना दिखाती हैं। वहाँ दिए चित्र में मकड़ा गोजर के टूटे पैर को अपने जाले से बाँध रहा है। शिक्षिका चित्र की ओर इशारा करके पाठ को पढ़ती हैं। फिर विद्यार्थियों से पूछती हैं कि क्या उन्होंने यह ध्यान दिया कि उनके तीन-चार पूर्वानुमानों में से कौन-सा सही निकला।)

ध्यान देने की बात है कि शिक्षिका ने ऐसे सवाल पूछे जिनके जवाब बच्चों को सोच-समझकर देने थे। बहुत सारी कक्षाओं में हमने देखा है कि शिक्षक "कौन और क्या" वाले सवाल ही पूछते हैं। मिसाल के लिए,

शिक्षक: गोजर के पैर ठीक करने में किसने मदद की?

बच्चे: मकड़ी ने।

शिक्षक: सही, मकड़ी ने।

इस तरह की बातचीत किताब को गहराई से समझने में बच्चों की कोई खास मदद नहीं करती। इसकी बजाय, जैसा कि दृश्य 2 में दिखाया गया है एक समृद्ध चर्चा बच्चों को "कैसे और क्यों" के बारे में सोचने और पाठ की बेहतर समझ बनाने में मदद करती है।

पाठ पढ़ते समय बच्चों का ध्यान चित्रों की तरफ भी ले जाएँ। तैयारी करते समय आप कुछ चित्र सुनिश्चित कर लें जिन पर आप रुककर बात करना चाहेंगे। मसलन, कौन से ऐसे चित्र हैं जो बच्चों को उस पाठ को बेहतर समझने में और उस पर प्रतिक्रिया देने में मदद करेंगे? क्या ऐसे कुछ दिलचस्प तत्व या ब्यौरे हैं जिनके बारे में बातचीत की जानी चाहिए? क्या चित्रों में ऐसी कुछ बातें हैं जो पाठ समझने में बाधा बन सकती हैं जिनके बारे में बच्चों को पहले ही आगाह कर देना चाहिए?

ऐसे शब्द जो जिनको समझने में बच्चों को कठिनाई हो सकती है उनकी एक सूची पहले से ही बना लीजिए ताकि सत्र के दौरान आप उनका अर्थ बताना न भूल जाएँ।

यह भी ध्यान रहे कि मुखर वाचन के दौरान होने वाली बातचीत संक्षिप्त होनी चाहिए ताकि पढ़ने का प्रवाह न टूटे।

7. किताब पढ़ने के बाद की चर्चा

आपने किताब पढ़ने से *पहले* और उसके *दौरान* बच्चों से उसके बारे में बातचीत की; अब समय है किताब को *पढ़ने के बाद* उस पर बातचीत करने का! इस समय पर किस तरह की बातचीत करना मददगार होगा?

यहाँ भी ऐसे सवाल तैयार करें जिनके जवाब छात्रों को सोच-समझ कर देने हों न कि महज़ एक-दो शब्दों में। किताब के बारे में बच्चों की क्या राय है, आप शुरुआत इससे कर सकते हैं। “क्या तुम्हें किताब पसंद आई?” "क्यों?” या "क्यों नहीं?” इस तरह की चर्चा के बाद आप अपने शैक्षणिक उद्देश्यों के अनुरूप कुछ सवाल पूछ सकते हैं (**परिशिष्ट 1** में वे सवाल हैं जिनको पूछने की तैयारी दृश्य में दिखाई शिक्षिका ने की थी)।

जेसिका हॉफ़मैन (2011) किताबों के बारे में परस्पर संवाद को प्रोत्साहित करने के लिए तीन रणनीतियों का सुझाव देती हैं। ये सुझाव मुखर वाचन के दौरान और बाद, दोनों चरणों के लिए उपयुक्त हैं लेकिन यह बेहतर होगा कि लम्बी बातचीत मुखर वाचन के बाद ही की जाए ताकि पाठ को पढ़ने की लय न टूट जाए। आप चाहें तो किसी और दिन किताब दोबारा पढ़कर उस पर लम्बी चर्चा चला सकते हैं।

रणनीति 1: क्लास में बातचीत प्रोत्साहित कीजिए: भारतीय कक्षाओं में आमतौर पर विद्यार्थियों को सिर्फ शिक्षक द्वारा पूछे गए किसी सवाल के जवाब में ही बोलने की अनुमति होती है। यह प्रवृति बच्चों को स्वाभाविक प्रतिक्रिया देने से हतोत्साहित करती है। पर उनकी सहज प्रतिक्रियाओं के जरिये ही बच्चे पाठ की एक सांझा समझ बना पाएंगे (इसकी चर्चा आगे की गई है)। इसलिए आपका पहला लक्ष्य यह होना चाहिए कि बच्चे उन्मुक्त बातचीत करें।[7] बच्चों को सवाल पूछने और उनका जवाब देने कि छूट दें, एक-दूसरे को प्रतिक्रिया देने दें और मुखर वाचन के दौरान या उसके बाद कभी भी टिप्पणी करने दें।

रणनीति 2: अर्थों का मिलजुल कर निर्माण करना: कई शिक्षकों को यह ज़रूरी लगता है कि *वे पाठ का अर्थ बच्चों को समझाएँ*। लेकिन बच्चों में तो खुद अर्थ गढ़ने की काफी क्षमता होती है! चर्चा के दौरान उनकी इस क्षमता का इस्तेमाल करें। उनकी सहज टिप्पणियों को जोड़ते चलें, उपयुक्त प्रतिक्रियाओं को बढ़ावा दें, बच्चों को एक-दूसरे की प्रतिक्रियाओं पर टिपण्णी देने का मौका दें – इस तरह पाठ की एक सांझा समझ बनाने में दिशा दें। दृश्य 3 इसका एक उदाहरण पेश करता है।

दृश्य 3

जब कक्षा में अगले दिन इस कहानी पर बातचीत हो रही थी तब एक विद्यार्थी ने पूछा कि आखिर उस गोजर को खाना तलाशने के लिए बाहर निकलने की ज़रूरत ही क्यों पड़ी - उसके आसपास तो काफी पत्ते बिखरे हुए थे? शिक्षिका ने कहा कि इस बारे में उन्होंने सोचा ही नहीं था। उन्होंने वह पन्ना खोला जहाँ इस घटना का ज़िक्र था। उस पन्ने के चित्रों को देख कर दूसरे विद्यार्थी अचानक चिल्लाया कि गोजर के आसपास बिखरे पत्ते नीले रंग के थे! शिक्षिका ने पूछा कि इसका क्या मतलब हो सकता है, और इस पर चर्चा करने के बाद छात्र इस नतीजे पर पहुँचे कि गोजर शायद इसलिए बाहर निकली

7 अगर आपको बातचीत से कक्षा में शोरगुल फैलने का डर है तो इसके लिए कुछ साधारण से उपाय आज़मायें। मसलन, किसी खास प्रतिक्रिया, जिस पर आप चाहते हैं कि बाकी बच्चे आगे बढ़ें, पर आप सबका ध्यान आकर्षित कर सकते हैं (*"सपना, तुमने क्या कहा?"*); या उस बिंदु तक की बातचीत का संक्षिप्त ब्यौरा दे सकते हैं (*"तो राजेश का कहना यह है कि... लेकिन आप में से कुछ का यह मानना है..."*); या समान्य ढंग से सबका ध्यान वापस ले आएँ (*"ठीक है, अब वापस इस किताब पर आपके विचारों की तरफ लौट आते हैं"*) (हॉफ़मैन, 2011)।

क्योंकि उसके आसपास के पत्ते सड़ गए थे। लेखक की शायद ऐसी कोई मंशा न रही हो लेकिन शिक्षिका ने इस व्याख्या को सही माना। इस तरह, कक्षा ने पाठ और चित्रों के ताने-बाने का उपयोग करते हुए इस घटना का मिलजुल कर अर्थ निर्मित किया।

रणनीति 3: अर्थों का पुनर्निर्माण: कभी-कभार ऐसा भी होता है कि बच्चे कहानी का गलत अर्थ निकालते हैं। ऐसी स्थिति में आप विद्यार्थियों को उस पाठ को दोबारा पढ़कर जो सामूहिक समझ बन रही है उसकी जाँच करने को कह सकते हैं। दृश्य 4 में यह दिखाया गया है।

दृश्य 4

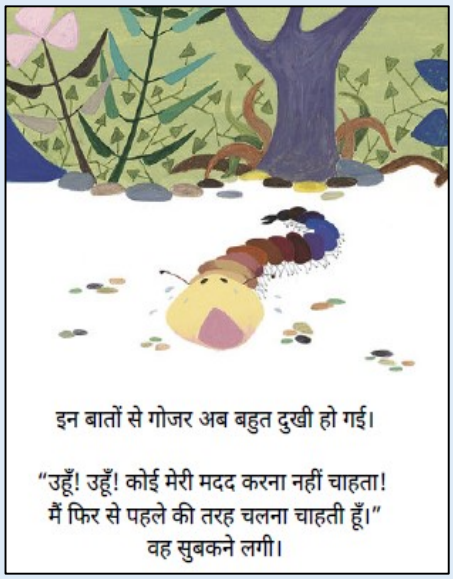

शिक्षिका उस मोड़ पर रुकती हैं जहाँ गोजर के 'दोस्त' व 'पड़ोसी' कोई भी उसकी मदद नहीं करता और बच्चों से पूछती हैं कि अब वह गोजर क्या करेगी। कुछ विद्यार्थी कहते हैं कि गोजर अब तितली से मदद माँगेगी। शायद इसलिए क्योंकि तितली उनके लिए एक जाना-पहचाना जीव है। पर कहानी में तितली ने पहले ही मदद करने से मना कर दिया था। विद्यार्थियों ने इस बात को ध्यान में रखते हुए अपने जवाबों को ठीक नहीं किया।

उनके गलत जवाब को एकदम से खारिज कर दूसरे विद्यार्थियों से सही जवाब निकलवाने की बजाय शिक्षिका ने इस जवाब की पड़ताल की। उन्होंने बाकी बच्चों से पूछा कि क्या ऐसा हुआ होगा, क्यों या क्यों नहीं। फिर उन्होंने वह पन्ना खोल कर दिखाया जहाँ गोजर तितली से मदद माँगती है और वह मना कर देती है। इस तरह शिक्षिका उन्हें कहानी के सही घटनाक्रम को समझने में मदद करती हैं।

अगर आपने कक्षा में ऐसी संस्कृति बनायी है जिसमें खुले रूप से चर्चा हो और एक-दूसरे के मतों की इज्जत हो,तो आपको यह चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नहीं कि अर्थ-निर्माण कि प्रक्रिया में आपके किसी सुधार या पुनर्निर्माण से विद्यार्थी भविष्य में अपनी बात कहने से हिचकिचायेंगे।

८. पाठ के बारे में बच्चों की प्रतिक्रिया

विद्यार्थियों को उनकी प्रतिक्रिया सिर्फ बातचीत के जरिए नहीं बल्कि दूसरे तरीकों से भी अभिव्यक्त करने का मौका दीजिए, जैसे चित्रकारी, लेखन या अभिनय के जरिए! हम यहाँ संक्षिप्त में कुछ सुझाव देंगे - आप और भी ऐसी गतिविधियाँ सोच सकते हैं।

चित्रकारी - बच्चों को चित्र बना कर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। यह उनकी अभिव्यक्ति के लिए सच्चे अवसर होने चाहियें न कि महज़ किताब से चित्रों की नकल उतारने के। इस के लिए आप कुछ सुझाव दे सकते हैं| जैसे, आप उनसे कहानी में उस घटना को दर्शाने को कहें जो उनके हिसाब से कहानी की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना थी या जिसका असर उन पर काफी समय तक बना रहा| आप उनसे यह भी दर्शाने को कह सकते हैं कि कोई महत्त्वपूर्ण घटना उनके विचार में किस तरह घटी होगी| अगर कहानी उनकी नी ज़िन्दगी या अनुभवों से कहीं जुड़ती हो तो उसके बारे चित्र बनाने को प्रेरित करें।

अभिनय – आप पूरी किताब (अगर वह छोटी है तो) या उसके कुछ महत्त्वपूर्ण हिस्सों को नाटक में रूपांतरित कर सकते हैं। बच्चे नाटक करना पसंद करते हैं और वे उसमें बिल्कुल तल्लीन हो जाते हैं क्योंकि अभिनय में उनका दिमाग, शरीर और आवाज़ सभी शामिल होते हैं। इसके अलावा, अभिनय उनको पाठ और उसके विषय में अपने विचारों व मनोभावों पर सोचने का मौका देता है। वुल्फ़ (2004) का सुझाव है कि आप शुरुआत में *पाठ में दिए गए दृश्यों के नज़दीक बने रहिए* – अपने विद्यार्थियों से सोचने को कहें कि उन दृश्यों पर आधारित संवाद या प्रतिक्रिया वे किस तरह दिखाएँगे। बच्चों से संवाद (dialogues) पर चर्चा करें और अगर वे नाटक का स्क्रिप्ट खुद नहीं लिख सकते तो आप उनकी मदद करें।

थोड़े समय के बाद, या बड़े बच्चों के साथ आप *ऐसे संवाद शामिल कर सकते हैं जो किताब में न हों* (वुल्फ़, 2004)। यह उस कहानी के दो या तीन पात्रों के बीच कोई घटना हो सकती है जो किताब में न हो, या फिर किताब के खत्म होने के बाद उनके जीवन में क्या हुआ, और इसी तरह की दूसरी चीज़ें। बच्चे पात्रों के बारे में जो कुछ जानते हैं उन्हें उसकी गहरी पड़ताल करनी होगी और फिर ऐसी घटनाओं की *रचना* करनी होगी। विद्यार्थी क्या दिखाना चुनते हैं उसके बारे में बात करने के लिए आप उनको प्रोत्साहित कर सकते हैं। जैसा कि आपको समझ में आया होगा, ऐसे अभिनय में किसी तरह के इंतज़ाम या श्रोताओं की ज़रूरत नहीं है। इसका प्राथमिक उद्देश्य है कि बच्चों ने जो पढ़ा है उस पर वे सोचें, चिंतन करें और अपनी प्रतिक्रियाएँ अभिव्यक्त करें।

एक और बड़ा उपयोगी तरीका है कि बच्चे उस पाठ का कोई पात्र 'बन' जाएँ या फिर उसका लेखक। कक्षा के बाकी बच्चे इनका 'साक्षात्कार' (इंटरव्यू) ले सकते हैं जिसमें वे उनकी मंशा और मनोभावों के बारे में पूछ सकते हैं, किसी दूसरी परिस्थिति में उन्होंने क्या किया होता या उसी परिस्थिति में उनकी प्रतिक्रिया किस तरह अलग हो सकती थी, लेखक ने चीज़ों के बारे में एक खास तरीके से ही क्यों लिखा है, वगैरह जैसे और सवाल।

लिखित प्रतिक्रियाएँ- विद्यार्थियों को अपनी प्रतिक्रियाएँ लिखने को प्रोत्साहित करें। इसके लिए हम यहाँ कुछ सुझाव दे रहे हैं। विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से लिखें इससे पहले उनको कुछ आप खुद लिखकर कुछ नमूने दिखाइए। जैसा कि चित्र 4 में दिखाया गया है, छोटे बच्चों को अपनी प्रतिक्रियाएं व्यवस्थित करने के लिए आप कुछ दिलचस्प वर्कशीट भी तैयार कर सकते हैं।

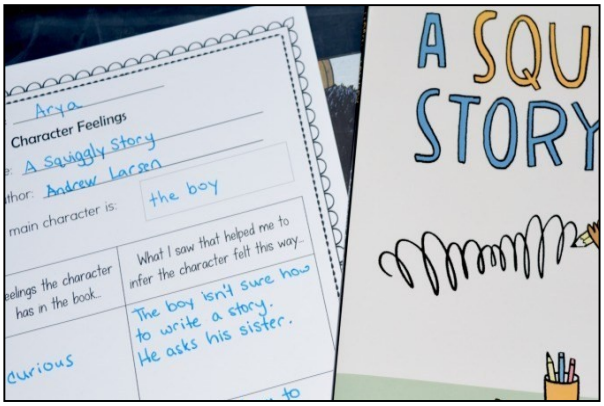

चित्र 4: पात्रों के मनोभावों को दर्ज करने के लिए वर्कशीट जिसमें विद्यार्थी ने कुछ लिखा है

(स्रोत: www.thecurriculumcorner.com)

- किताब/कहानी के बारे में विद्यार्थियों की आम प्रतिक्रिया - उनको क्या पसंद आया, क्या नापसंद और क्यों।
- कहानी से मिलते-जुलते अपने जीवन के घटनाओं/अनुभवों पर लिखना।
- बच्चे किसी पात्र को चिट्ठी लिख सकते हैं जिसमें वे उसे कुछ बता या पूछ सकते हैं, या उसके बारे में या उसके किसी कार्य के बारे में अपने विचार या मनोभाव लिख सकते हैं। इसी तरह, वे लेखक को अपनी टिप्पणियाँ, सवाल या सुझाव लिख सकते हैं।
- अगर पर्याप्त संसाधन हों तो बच्चे एक डायरी रख सकते हैं जिसमें वे इन किताबों के बारे में अपनी प्रतिक्रियाओं को दर्ज़ कर सकते हैं। बड़े बच्चों के साथ बड़ी किताबों / लम्बी कहानोयों का मुखर वाचन करते हुए आप उनसे डायरी में उनकी उभरती प्रतिक्रियाएँ, सवाल या पूर्वानुमान आदि लिखने को कह सकते हैं (वुल्फ़, 2004)।

- विद्यार्थी कहानी को आगे बढ़ाते हुए या उसके अंत को बदलते हुए लिख सकते हैं। या फिर वे कहानी की किसी केन्द्रीय घटना को बदलने से कहानी में क्या होगा, इस बारे में लिख सकते हैं।
- आप विद्यार्थियों को मुख्य पात्र के विभिन्न मनोभावों की सूची बनाने और अपने कथन के समर्थन में किताब से सूचना देने को कह सकते हैं (देखें चित्र 4)।
- कक्षा में जो किताबें पढ़ी गई हैं उनके विषय या लेखन शैली को अपनाते हुए बच्चे अपनी किताबें बना सकते हैं।[8]
- कथेतर साहित्य के मामले में विद्यार्थी ऐसी कोई पाँच चीज़ों के बारे में लिख सकते हैं जो उन्होंने पाठ से सीखा है। वे चाहें तो एक 'सूचना जाल' बना सकते हैं जिसके मुख्य वर्गों को वे आपकी मदद से तय कर सकते हैं। मिसाल के लिए, साँपों पर आधारित ऐसे जाल में उनके आकार, किस्मों, आहार व रहवास की जानकारियाँ दी जा सकती हैं।

9. अवलोकन व चिंतन

मुखर वाचन सत्र के बाद विद्यार्थियों के बारे में अपने अवलोकन को दर्ज करें। आप पूरे समूह या कुछेक विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं पर टिप्पणियाँ लिख सकते हैं। इसके अलावा, पूरे सत्र पर चिंतन कीजिए – सीखने के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के मज़बूत पक्ष और ज़रूरतें क्या रहीं? क्या आप सत्र के उद्देश्य को ढंग से पूरा कर सके? बतौर फैसिलिटेटर आपकी क्या खासियतें और ज़रूरतें हैं? इन सबका इस्तेमाल आप अगले सत्र की योजना बनाने में कर सकते हैं। हमारे दृश्यों में शिक्षिका ने जो अवलोकन व चिंतन दर्ज किया है वह पढ़ने के लिए परिशिष्ट 1 देखिए।

सार-संक्षेप

एक अच्छे मुखर वाचन सत्र के लिए कुछ ज़रूरी बिंदु :

1. अपने विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि, ज़रूरतों व क्षमताओं के अनुसार दिलचस्प पाठों का चयन कीजिए।

8 इस बारे में ज़्यादा जानकारी के लिए ईएलआई हैंडआउट "चिल्ड्रेन्स राइटिंग: क्रिएटिंग बुक्स इन द क्लासरूम" देख सकते हैं।

2. तय करें कि चुनी हुई किताब का इस्तेमाल आप किसलिए करेंगे - क्या आप उसके जरिए बच्चों को पूर्वानुमान लगाने में मदद करेंगे? कहानी को उनकी ज़िन्दगी या अनुभवों से जोड़ेंगे? चित्रों का अध्ययन करेंगे? मुखर वचन के लिए कुछ रोचक उद्देश्य चुनें।
3. पूरे सत्र में, यानी पढ़ने से *पहले*, पढ़ने *के दौरान* और पढ़ने के *बाद* भी किताब पर चर्चा करने की योजना बनाइए। चर्चा को समृद्ध बनाए रखिए। "कौन-क्या" जैसे सवाल नहीं बल्कि ऐसे सवाल पूछिए जो बच्चों को पाठ के बारे में गहराई से सोचने के लिए प्रेरित करें।
4. बच्चों को किताब *समझाइए* मत। इसकी बजाय बच्चों *के साथ मिल कर* किताब के अर्थ का निर्माण कीजिए। अगर बच्चे बिल्कुल ही उल्टी दिशा में चले जाएँ और कहानी को पूरी तरह से गलत समझ बैठें तो उनको सुधारने से हिचकिचाएँ नहीं। किताब वाकई क्या कह रही है उसकी तरफ उनका ध्यान ले जाइए और कोशिश करें कि सब मिल कर कहानी का ज़्यादा सार्थक अर्थ बना पाएँ।
5. बच्चों को पाठ के प्रति अपनी प्रतिक्रिया महज़ बातचीत की बजाय लिखकर, चित्र बनाकर या अभिनय के ज़रिए भी अभिव्यक्त करने के मौके दें!
6. मुखर वाचन की योजना किये बिना सीधे कक्षा में किताब उठा कर पढ़ना शुरू कर देने से बात नहीं बनेगी! पहले योजना बनाइए और फिर अभ्यास कीजिए, जी हाँ अभ्यास, अभ्यास, अभ्यास!

सन्दर्भ

बैरेन्टाइन, एस. जे. (1996). एनगेजिंग विद रीडिंग थ्रू इंटरैक्टिव रीड-अलाउड्स. *द रीडिंग टीचर*, 50(1), पृ. 36-43.

हॉफ़मैन, जे. एल. (2011). कोकॉन्सट्रक्टिंग मीनिंग: इंटरैक्टिव लिटरेरी डिसकशन्स इन किंडरगार्टेन रीड-अलाउड्स. *द रीडिंग टीचर*, 65(3), पृ. 183-194.

नेशनल बुक ट्रस्ट. 2014. *द गुड बुक गाइड*. नई दिल्ली: एनबीटी.

शेड, एम. के. व ड्यूक, एन. (2008). द पॉवर ऑफ़ प्लानिंग: डेवेलपिंग एफेक्टिव रीड अलाउड्स. *यंग चिल्ड्रन*, 63(6), पृ. 22-27.

स्टॉल, एस. ए. (1992). सेइंग द "पी" वर्ड: नाइन गाइडलाइन्स फ़ॉर एग्ज़ेम्प्लरी फ़ोनिक इंसट्रक्शंस, *द रीडिंग टीचर*, 45(5), पृ. 618-625.

वुल्फ़, एस. (2004). *इंटरप्रेटिंग लिटरेचर विद चिल्ड्रन.* अध्याय 2 व 3, न्यू जर्सी: लॉरेन्स एलबॉम एसोसिएट्स, इंक.

लेखन: अखिला पैडा

अवधारणा सहयोग व संपादन: शैलजा मेनन

कॉपी-एडिटिंग (अंग्रेजी पाठ): चेतना दिव्या वासुदेव

हिंदी अनुवाद: लोकेश मालती प्रकाश

लेआउट व डिज़ाइन – हर्षिता वी. दास

यह प्रकाशन टाटा ट्रस्ट द्वारा टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज़ (TISS), हैदराबाद को दिए गए अनुदान से संभव हुआ है।

यह पाठ क्रिएटिव कॉमंस एट्रिब्यूशन-नॉन कमर्शियल-नो डेरिवेटिव्स 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस के अंतर्गत लाइसेंसीकृत है। इस लाइसेंस की विस्तृत जानकारी के लिए यहाँ देखें - http://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/.

परिशिष्ट 1: मुखर वाचन योजना गाइड[9]

योजना के मुख्य बिंदु	शिक्षिका के नोट्स
किताब/पाठ • मुखर वाचन के लिए आप किस किताब/ पाठ को चुन रहे हैं? • क्या पाठ उचित गुणवत्ता का है? • क्या किताब में उच्च-स्तर की बातचीत पैदा करने की गुंजाइश है? • अपने विद्यार्थियों के बारे में सोचें - उम्र, पृष्ठभूमि, शैक्षणिक ज़रूरतें। क्या यह पाठ उनके लिए ठीक है? क्या उनकी रुचि इसमें होगी?	**किताब – एक सौ सैंतीसवाँ पैर (प्रथम बुक्स, माधुरी पुरंदरे)** पाठ की गुणवत्ता अच्छी है। सतही रूप से यह कहानी मुख्य पात्र के ज़ख़्मी होने और किसी की मदद मिलने की कहानी है, लेकिन इस किताब में समानुभूति, करुणा और 'दोस्ती' के बारे में बातचीत की काफी गुंजाइश है। मेरे विद्यार्थी एक स्वैच्छिक संस्था द्वारा संचालित स्कूल की पहली व दूसरी कक्षा में पढ़ते हैं। स्कूल उनके समुदाय के बीच (एक शहरी बस्ती) में चलता है। बच्चे हिन्दी और पारधी/गोण्डी को मिलाजुला कर बोलते हैं। यह छोटी व सरल कहानी है जो ये छोटे बच्चे आसानी से समझ पाएँगे। इसके चित्र उनको आकर्षक लगेंगे। कहानी के पात्र (कीड़े, पक्षी आदि) और साथ ही खुद को चोट पहुँचाने, मदद माँगने, दोस्ती आदि जैसे प्रसंगों से इस उम्र के बच्चे खुद को आसानी से जोड़ कर देख सकेंगे।
सत्र का केन्द्रीय बिंदु/उद्देश्य • आपके सत्र का उद्देश्य क्या है? • क्या उद्देश्य के हिसाब से यह सही पाठ है?	मेरा उद्देश्य है कि बच्चे कहानी और दुनिया के अपने ज्ञान के आधार पर कहानी में घटनाओं और प्रतिक्रियाओं का अनुमान लगाना सीखें। पाठ में उभरती सूचनाओं के आधार पर उन्हें अपने पूर्वानुमानों की जाँच करना भी आना चाहिए। कुशल पाठक पढ़ने के दौरान इस तरह से लगातार अर्थों का निर्माण करते रहते हैं। इस किताब में ऐसी दो-तीन महत्त्वपूर्ण जगहें हैं जहाँ विद्यार्थियों से पूर्वानुमान लगाने को कहा जा सकता है। साथ ही, इस किताब का कथानक इतना जटिल भी नहीं है कि वे

9 मेनन, एस., क्लास हैंड आउट, एम. ए. शिक्षाशास्त्र कार्यक्रम, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय। नॉर्थशोर रीड एलाउड प्लानिंग फ़ॉर्म से रूपांतरित; कॉम्ब्स, एम., (1996), डेवलपिंग कॉम्पीटेन्ट रीडर्स एंड राइटर्स इन प्राइमरी ग्रेड्स; और हॉफ़मैन, जे. एल., (2011), कोकॉन्सट्रक्टिंग मीनिंग: इंटरैक्टिव लिटरेरी डिसकशन्स इन किंडरगार्टेन रीड-अलाउड्स।

	कहानी को समझ ही न सकें।
बातचीत की शुरुआत • आप किताब से परिचय किस तरह से कराएँगे कि बच्चे उसमें दिलचस्पी लें? • किताब को समझने के लिए क्या बच्चों को कोई महत्त्वपूर्ण सूचना, संबंधित जानकारी या शब्दों के अर्थ बताना ज़रूरी है?	शुरुआती चर्चा में मैं विद्यार्थियों का ध्यान किताब के दिलचस्प शीर्षक की तरफ ले जाउँगी और उनसे ऐसे जीवों के बारे में सोचने को कहूँगी जिनके इतने सारे पैर होते हों। हो सकता है वे 'एक सौ सैंतीस' संख्या को आसानी से न समझ सकें लेकिन कहानी को लेकर उनमें रुचि जगाने के लिए ज़रूरी है कि इस संख्या (सौ से ज्यादा) का कुछ अंदाज़ा लगा सकें। इसलिए मैं इस पर ध्यान दूँगी। मैं उनसे किताब के कवर को देख कर कहानी के जगह के बारे में अंदाज़ा लगाने को कहूँगी। बच्चे शायद 'गोजर' शब्द न जानते हों, इसलिए मैं उन्हें बताउँगी कि 'गोजर' एक तरह की इल्ली होती है।
मुखर वाचन के दौरान परस्पर संवाद • ***चर्चाएँ -*** पाठ के उद्देश्य के आधार पर ऐसी 3-4 जगहें तय करें जहाँ चर्चा हो सके। • ***चित्र*** – किन चित्रों पर आप बच्चों का ध्यान आकर्षित करेंगे? • ***ज़रूरी शब्द*** – क्या पाठ में ऐसे 2-4 शब्द है जिनको समझना विद्यार्थियों के लिए ज़रूरी/ मुश्किल है? (ये शब्द उन शब्दों से अलग हैं जिनकी चर्चा शुरुआत में की गई थी)	मैं निम्न बिंदुओं पर विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाएँ आमंत्रित करूँगी**:** 1. **पृ. 7:** गोजर का पाँव टूट जाता है। अब क्या होगा? (सामान्य पूर्वानुमान) 2. **पृ. 11:** कोई उसकी मदद नहीं करता। अब वो क्या करेगी? (पूर्वानुमानों में उन विकल्पों का ज़िक्र नहीं होना चाहिए जो गोजर पहले ही आज़मा चुकी है) 3. **पृ. 14:** मकड़ा गोजर की मदद के लिए तैयार हो जाता है: • मकड़ा कहता है कि वह सिर्फ 8 तक गिनेगा, ऐसा क्यों? (यहाँ बच्चों को अपने पूर्वज्ञान का इस्तेमाल करना होगा) • तुम्हें क्या लगता है कि मकड़ा गोजर का पैर कैसे जोड़ेगा? (पूर्वज्ञान पर आधारित पूर्वानुमान) (मैं अगले पन्ने को ढक कर रखूँगी) • जब गोजर अपने पैरों को गिन कर टूटे पैर को खोज निकालती है, वहाँ बच्चों से किताब के

	शीर्षक का महत्त्व पूछना। मैं बच्चों को प्रोत्साहित करूँगी कि हम जैसे-जैसे किताब पढ़ते हैं वे चित्रों पर ध्यान देते रहें। इन कठिन शब्दों को पढ़ते हुए समझाना है: खुमारी, दुबकी (पृ.4); सुबकने (पृ.12)
मुखर वाचन के बाद किताब पर चर्चा ऐसे सवाल सोचिए जिनसे बच्चे किताब के बारे में बिना सोचे-समझे संक्षिप्त जवाब देने की बजाय विचारपूर्ण प्रतिक्रिया देने को प्रेरित हों। इसका उद्देश्य है कि विद्यार्थी जो कुछ पढ़ रहे हों उसे गहरे रूप से समझने में उन्हें कुछ मदद मिले।	**मुखर वाचन के बाद किताब उस पर चर्चा शुरू करने के लिए मैं ये सवाल पूछूँगी :** 1. **व्यापक प्रतिक्रियाएँ:** • क्या तुम्हे किताब पसंद आई? क्यों? या क्यों नहीं? • कहानी का कौन-सा हिस्सा तुम्हे पसंद आया? क्यों? • कहानी का कौन-सा हिस्सा तुम्हे पसंद नहीं आया? क्यों? 2. **गहराई में उतरना:** मेरे विद्यार्थी विस्तार से जवाब देने के आदी नहीं हैं। आमतौर पर वे "अच्छा लगा/बुरा लगा" या "हाँ/ना" जैसे जवाब देते हैं। लेकिन मेरी कोशिश होगी कि ऐसे जवाबों को थोड़ा और आगे ले जाते हुए समानुभूति, करुणा व दोस्ती के बारे में कुछ बातचीत शुरू करूँ: • जिन पक्षियों व कीड़ों से गोजर मदद माँगती है वे तुम्हें कैसे लगें? क्यों? • क्या तुम उनको गोजर के दोस्त कह सकते हो? किस आधार पर? • मधुमक्खियाँ काम में व्यस्त थीं इसलिए गोजर की मदद नहीं कर सकीं। क्या उनकी प्रतिक्रिया तितली या गौरैया की प्रतिक्रिया से अलग है जिन्होंने गोजर के साथ बुरा व्यवहार किया और उसकी मदद भी नहीं की? क्यों? क्यों नहीं? 3. **व्यक्तिगत जुड़ाव:** • क्या तुम्हारे साथ कभी ऐसा हुआ है? उस समय तुम्हे कैसा महसूस हुआ था? • अगर तुम्हारा कोई दोस्त मुश्किल में हो तो तुम क्या करोगे? क्या कुछ मिसालें दे सकते हो?
अवलोकन सत्र के बाद विद्यार्थियों के बारे में अपने	• विद्यार्थी आमतौर पर पाठ के साथ थे, हालाँकि कभी-कभार कुछेक विद्यार्थियों का ध्यान भटक जाता था। उनका ध्यान वापस खींचने के लिए मैंने उनसे किताब के चित्रों पर कुछ सवाल पूछे।

अवलोकन दर्ज किजिए। ये पूरी कक्षा के बारे में हो सकते हैं है या कुछ विद्यार्थियों की कुछ महत्त्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं के बारे में।	• कक्षा दूसरी के बच्चे (जिनका मुखर वाचन का अनुभव ज़्यादा था) पूर्वानुमान लगाने में ज़्यादा माहिर थे। पहली कक्षा के बच्चों को पूर्वानुमान लगाते समय किताब में हो चुकी घटनाओं को ध्यान में रखने में मुश्किल हो रही थी। मिसाल के लिए, हालाँकि गोजर तितली से पहले ही मदद माँग चुकी थी, जब मैंने कुछ समय बाद ही यह पूछा कि अब गोजर क्या करेगी तो उन्होंने पूर्वानुमान लगाया कि वह तितली से मदद माँगेगी। • व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर समृद्ध बातचीत हुई लेकिन मुझे लगा कि कुछ विद्यार्थी अपने अनुभवों को किताब से जोड़े बिना बस आम बातें सांझा कर रहे थे।
चिंतन मुखर वाचन के अनुभव पर विचार करते हुए इन बातों पर ध्यान दीजिए: • विद्यार्थियों के सीखने के सन्दर्भ में उनके मज़बूत पक्ष और ज़रूरतें • बतौर फैसिलिटेटर आपकी खूबियाँ व ज़रूरतें • इस समूह के साथ अगले कदम	• पहले से मौजूद जानकारी (किताब से मिली जानकारी या दुनिया के बारे में सामान्य ज्ञान) के इस्तेमाल में छोटे बच्चों को ज़्यादा मदद की ज़रूरत है ताकि वे कहानी को बेहतर समझ सकें और उपयुक्त पूर्वानुमान लगा सकें। • बड़े बच्चे पूर्वानुमान लगा पा रहे थे और वे दुनिया के बारे में अपनी आम जानकारी को कहानी समझने में लागू कर पा रहे थे (मिसाल के लिए यह कि मकड़ा सिर्फ 8 तक की गिनती क्यों जानता था)। लेकिन मैं हर मामले में इसकी जाँच नहीं कर पाई कि क्या वे किताब में उभरती जानकारी के आधार पर वे अपने पूर्वानुमानों को जाँच रहे थे या नहीं। मुझे इस पर थोड़ा और ध्यान देना होगा। • मुझे लगता है कि इस किताब में बच्चों को ज़्यादातर 'सामान्य पूर्वानुमान' लगाने थे। यह एक ज़रूरी कौशल है। लेकिन धीरे-धीरे मुझे ऐसी किताबें भी उनके सामने लानी हैं जिनमें ज़्यादा विशिष्ट "पाठ से जुड़े" पूर्वानुमान लगाने हों यानी ऐसे पूर्वानुमान जिनके लिए किताब में दी गई सूचनाओं का इस्तेमाल करना हो। • विद्यार्थी व्यक्तिगत अनुभव सांझा करते समय काफी तल्लीन दिख रहे थे। लेकिन शायद मुझे उनसे कहना होगा कि वे अपने अनुभवों को स्पष्ट रूप से किताब से जोड़कर सामने रखें। • इन बच्चों को किसी विषय या प्रतिक्रिया पर लम्बी चर्चा के लिए ज़्यादा मदद और प्रोत्साहन की ज़रूरत होगी। शायद यही कारण है कि हम किताब में निहित समानुभूति व करुणा के विषयों पर उतनी चर्चा नहीं कर सकें जैसा मैं चाहती थी।